हम आशना न थे

नवतेज सरना

Hum Aashnaa Na The

by Navtej Sarna

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से

प्रकाशितः नवंबर 2007

मुद्रणः पेंगुइन

मूल्यः रु 150.00

आई एस बी एनः 0143101765

ऐडिशनः पेपर बैक

फ़ॉरमेटः बी

पृष्ठः 228pp

वर्गीकरणः उपन्यास-अनूदित

क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** November 2007
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs.150.00
- **Cover Price:** Rs.150.00
- **ISBN:** 0143101765
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 228pp
- **Classification:** Fiction
- **Rights:** World

मैं जा रहा हूं। वो काम करने, जिसमें मैं शायद अभी भी माहिर हूंः भागने में। अल्हड़ हरी-भरी पहाड़ियों की ओर, मेरी रगों में एक बार फिर एक अनजान भूली सी चाहना दौड़ गई है। सहस्राब्दी का प्रारंभ होते ही आफ़ताब का जीवन यकायक बिखर गया। वह चालीस साल का था। चौदह साल के वैवाहिक जीवन के बाद उसकी पत्नी, उनके इकलौते बेटे को लेकर किसी दूसरेव्यक्ति के साथ चली गई थी।

वह देहरादून जानेवाली रेलगाड़ी में बैठा है। देहरादून, जहां उसका बचपन बीता था। निजी और व्यावसायिक समझौतों से भरे अधूरे अतीत में देखते हुए उसे आशा की केवल एक धुंधली सी किरण ही नज़र आती है, जो उसे निराशा के गर्त में गिरने से बचा सकती है। शायद यह पलायन उसे बहुत पहले खो गई अपनी मोहब्बत को दोबारा पाने का मौक़ा दे दे और वह फिर एकनई शुरुआत कर सके। इंसानी जज़्बात पर गहरी पकड़ और विलक्षण संवेदनशीलता के साथ नवतेज सरना ने खोए हुए मौक़ों और अनकही मोहब्बत की एक अनूठी दास्तान बयान की है।

लेखक परिचय

नवतेज सरना का जन्म जालंधर में हुआ था। दिल्ली विश्वविद्यालय से कॉमर्स और लॉ की शिक्षा प्राप्त करके, 1980 में आप भारतीय विदेश सेवा में सम्मिलित हो गए। अपने सेवाकाल के दौरान आपमॉस्को, वॉरसॉ, थिम्पू, जिनेवा, तेहरान और वॉशिंग्टनमें रहे। आप विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रह चुके हैं। आपकी अनेक कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं। यह आपका पहला उपन्यास है।

अनुवाद

शुचिता मीतल अनुवाद से एक लंबे अरसे से जुड़ी हैं। वे महिला पत्रिका वनिता में उप-संपादक रह चुकी हैं।